# भारतीय कला के संदर्भ में राय कृष्णदास का कला चिन्तन

**राकेश बानी**
*असिसटेंट प्रोफेसर*
*ललित कला विभाग*
*कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयए कुरुक्षेत्र*

**पूनम**
*शोधार्थिनी*
*ललित कला विभाग*
*कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र*
*ईमेलः punam1703.ys@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

**राकेश बानी**
**पूनम**

*''भारतीय कला के संदर्भ में राय कृष्णदास का कला चिन्तन ´*

Artistic Narration 2020,
Vol. XI, No. II,
Article No. 20 pp. 123-127

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xi-no-2-july-dec-2020/

***सारांश***

*राय कृष्णदास एक प्रसिद्ध कला मर्मज्ञ, कला इतिहासकार, कला के प्रति अगाध प्रेम रखने वाले, कलाकृतियों के संग्रहकर्त्ता और संग्रहालय विशेषज्ञय, आदि महापुरुष के रूप में जाने जाते हैं । कला को उच्च मार्ग तक पहुँचाने में इन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । कला इनके व्यक्तित्व की पहचान थी । कला मर्मज्ञय विद्वान जो उन्हें जानते थे उन्हें प्यार व आदर से सरकार जी कहते थे । सभी उनके अनुभवों को अपनी कला समीक्षा में विश्लेषित करते थे। उस समय के कला समीक्षक उनकी सलाह से कार्य करते थे ।*

## प्रस्तावना

"रायकृष्णदास का जन्म 1892 में काशी के भारत प्रसिद्ध राय खानदान में हुआ । इनके पिता रायप्रहलाद दास, भारतेन्दु हरिशचन्द्र के फुफेरे भाई थे वे बहुत बड़े विद्या–व्यसनी एवं कला–मर्मज्ञ थे। अतः इस विषय में पिता की संजीव छाप रायकृष्ण दास पर पड़ी है ।"[1] इनकी शिक्षा घर पर ही हुई परन्तु धर्म, दर्शन और इतिहास, पुराण, साहित्य व कला सभी क्षेत्रों में उनका ज्ञान और उनकी सूझ–बूझ अद्भुत थी । कला की परख जैसी रायकृष्णदास को थी ऐसी सूझ–बूझ शायद ही किसी गिने–चुने लोगों को हो । कला की व्याख्या वे इतने अद्भुत तरीके से करते थे जिसे पढ़कर ऐसा अनुभव होता था कि वह प्रतिमा हमारे सामने खड़ी हो । कला के प्रति वे पूर्णतः समर्पित थे ।

"रायकृष्णदास के विशय में कवि 'अज्ञेय' ने लिखा है "उन्हें मात्र कला पारखी और कला इतिहासकार कहना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें यह कहकर छोड़ देना परम्परा के साथ अन्याय करना होगा, क्योंकि वे तो एक समृद्ध परम्परा के समग्र एवं संतुलित रूप थे ।"[2]

कला के प्रति अगाध प्रेम उनके मन में कहा से प्रज्वलित हुआ उसके सम्बन्ध में रायकृष्णदास के विचार– "अल्फ्रेड पार्क में मेरा आकर्षक थी 'थार्नहिल लाईब्रेरी उसमें बैठकर मैं कितनी बार अंजता चित्रावली में सराबोर हुआ हूँ यहाँ तक कि उसकी रेखा–रंगों वाली भाषा, मेरे रोम–रोम में बस गई और मेरा आपा तदरूप हो गया । उन दिनों उस लाईब्रेरी में एक ओर एक छोटा सा मूर्ति–संग्रह भी था । मैं उसे रोज–रोज देखकर भी न अघाता मूर्ति कला का ठोसपन और भंग भगिया तभी से मुझमें घर कर गई ।"[3]

अजंता के जिन चित्रों का परिचय रायकृष्णदास ने दिया है वह गिफिथ साहब की अजंता चित्रावली थी । गिफिथ साहब की चित्रावली में उन चित्रों का भी विश्लेषण मिला है जो अब नष्ट व धूमिल पड गये है ।

अजन्ता की चित्रावली बोधिसत्त्व पद्मपाणि के विषय में रायकृष्णदास के विचार– "इनका मत है कि सिन्दूर रंग से चित्रांकन होने के कारण रंग काले पड़ गये हैं । इस चित्र की प्रशंसा करते हुए उन्होंने लिखा है, उनकी भावमग्न, आँखें जैसे किसी ऊँचाई से देखने के कारण नीचे की और झुकी है, मानो सारे संसार की व्यथा को देख, उसे दूर करने के लिए वे उत्सुक हैं । उनका आकार आस–पास की आकृतियों से विशाल है जिससे उसकी विशिष्टता का ज्ञान होता है सर्वोपरि है उनका किंचित भंग, जिसकी अटूट रेखाएं द्रष्टव्य हैं । एक कलाविद का कथन है कि "सिस्टाइन पूजाग्रह' में लियोनार्डी द विन्सी द्वारा निर्मित 'अन्तिम भोज' में ईसा की आकृति जिस भव्य और आत्मत्याग के साथ विश्व कल्याण की भावना प्रकट करती है, ठीक वही प्रभाव अजन्ता के 'बोधिसत्व पदमपाणि' के चित्र का है" ।[4]

रायकृष्णदास जी को कला की व्यवस्था के साथ–साथ कला के संग्रहण का भी काफी शौक था । वे कला के क्षेत्र में नीर–क्षीर विवेकी थे । कला के विकास में सदैव तत्पर रहते थे । जिसका एक उदाहरण है आनन्द कुमार स्वामी जी का स्वप्न जो सही मायने में रायकृष्ण दास द्वारा सम्पन्न किया गया। आनन्द कुमार स्वामी अपने जीवन की कलात्मिक पूँजी भारत को समर्पित करना चाहते थे एक संग्रहालय के रूप में ।

काशी में कला संग्रहालय स्थापित कर रायकृष्णदास ने आनन्दकुमार स्वामी का स्वप्न पूरा किया। बनारस विश्वविद्यालय में कला भवन की स्थापना की जो उनके कला के प्रति अगाध प्रेम का सूचक है जो कला मर्मज्ञों इतिहासकारों के लिए अकार्षण का केन्द्र रहा । संग्रहालयों में कलाकृति का अधिक से अधिक संग्रहण हो, संरक्षित हो और कलाकृतियां अपने देश में ही रहे व कला का समीक्षात्मक विश्लेषण देशी भाषा में हो। देशी भाषा को बढ़ावे देने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । कलात्मक वस्तुओं व चित्रकला मूर्तिकला का वास्तविक महत्त्व संग्रहालयों में संगृहित से होता है, ना कि नीजि संकलन से जहाँ किसी कलाकृति का अस्तृत्व ही अंधकार पूर्ण हो जाता है । संग्रहालयों में उसकी विशिष्ट उपयोगिता होती है । इतिहास इस बात का साक्षी है जो कलाकृति व विभिन्न कला व स्मारक हमारी अमूल्य धरोहर है उनके साक्ष्य आज हमारे बीच विद्यमान है । वे पुरातत्व सम्बन्धी कला मर्मज्ञों का कला के प्रति अरूढ प्रेम है ।

## कला भवन में कला स्मृतियाँ

भारत कला भवन में मूर्तिकला का प्रसिद्ध व विशाल भवन है जिसमें विभिन्न गुप्त, चोल, पल्ल व काल की मूर्ति संगृहित है मूर्तिकला के साथ–साथ, चित्रकला का संग्रहण भी उचित मात्रा में उपलब्ध है जिसमें मुगल काल से लेकर राजस्थानी व आधुनिक काल तक के कलाकारों के कार्य इस संग्रहालय की शोभा को चार–चाँद लगा रहे हैं ।

भारत कला भवन में कला कृतियाँ व अभिलेखों के अतिरिक्त मुगलकालीन सिक्कों को भी प्रदर्षित किया गया व उनमें कलाकृतियों में चित्रों को बखुबी उभारा गया है ।

संग्रहालय में चित्र व मूर्तियों के साथ–साथ विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों व चित्रित लेख, पण्डुलिपियों को भी संगृहित किया गया है । आने वाले समय में कला भवन पर्यटकों के साथ–साथ शोधकर्त्ताओं के लिए भी एक वरदान साबित होगा । क्योंकि कला भवन में विभिन्न चित्र मूर्तियाँ व सिक्के पुस्तकें, कलात्मक वस्तुओं का पूर्ण मात्रा में समावेष होगा ।

## राय कृष्णदास द्वारा लिखित लेख व पुस्तकें

"रायकृष्णद्वारा लिखित लेख 'अकबर कालीन चित्र और उनके चित्रकार' 'पुराणों का चातुर्दीपिक भूगोल और आर्यों की आदि भूमि, 'पिक एनामेलिंग ऑफ बनारस' 'एन अलस्ट्रेटेड मैनुस्क्रिप्ट, ऑफ लॉट चन्दा, इन दी भारत कला भवन' और ए वासवदत्ता उदयन टैराकोटा प्लैक फ्रॉम कौशाम्बी"[5] आदि पुस्तकें रायकृष्ण द्वारा लिखित कला की धरोहर व उनके कलात्मक दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन है जो उनके लेखों व पुस्तकों के माध्यम से प्रस्फुटित हुआ है । रायकृष्ण का कलात्मक सफर भारत भवन तक ही सीमित नहीं रहा, भारत में जितनी भी कला संस्थाएँ बनी उन संस्थाओं में इस महान् विद्वान् का विशेष योगदान रहा । रायकृष्णदास संग्रहालय समीति के सलाहकार सदस्य भी रहे । रायकृष्णराय द्वारा भारत भवन में विभिन्न पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । रायकृष्णदास के प्रयास से व कला के महान् मनीषियों की लगन से ललित कला अकादमी नई दिल्ली में समकालीन कला का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। जो कला मर्मज्ञों के कला के प्रति दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रमुख माध्यम बना जिस कला व कलाकृतियों को आम जन तक पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

रायकृष्णदास का कला के प्रति योगदान विस्मरणीय रहेगा । इन्हें कला विधा का अगामी लेखक होना का श्रेय प्राप्त था कला के इस दौर के बाद डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीचन्द्र, भगवतशरण उपाध्याय, सतीश चन्द्र काला, कृष्णदत्त वाजपेयी, रत्नचन्द्र अग्रवाल और जगदीश गुप्त जैसे विद्वानों ने अपने लेखों के माध्यम से कला को पल्लवित व पुष्पित किया ।

## उपसंहार

राय कृष्णदास कला इतिहासकार, विद्वान व कला मर्मज्ञ के रूप में पल्लवित हुए । रायकृष्णदास दीपक की उस लौ के समान थे जिसने सदा कला को प्रकाशित किया । कला को नया दृष्टिकोण दिया। कला संग्रहालयों की स्थापना कर कला का संग्रहण किया व कला इतिहासकारों के लिए उनके विचार सर्वोपरि थे । आज हमारे देश में कला के संग्रहण के पति सजगता जागृत हुई है उसमें राय कृष्णदास का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । उनका मानना था कि कला का वास्तविक स्थान संग्रहालयों में है ना कि नीजि संकलन में । इस महान् कला विद्वान की कलात्मक दृष्टिकोण सदैव रमणीय रहेगा । वह कला के लिए एक ऐसा एतिहासिक पल प्रज्वलित कर गये जिसका ऋण आने वाली कई पीढ़िया स्वीकार करेगी ।

पाष्चात्य कला समीक्षकों का भारतीय कला समीक्षा में विशेष व स्मरणीय योगदान रहा है । दृश्य कला की विभिन्न विधाओं में कृत्य होने के कारण भारतीय कला को जन–जन के सम्पर्क तक पहुँचाने में समीक्षकों की विशेष भूमिका रही है । आज हम जिन पौराणिक भूमिका चित्रकलाओं व छापाचित्रों, मूर्तिकलाओं का करीबी से अनुभव व उस कला से साक्षात् हो पाये तो ये सभी उन अनुभवी व अनुसंधानात्मक समीक्षकों का ही योगदान है नहीं तो ये कलाएँ समय के गर्त में दबकर रह जाती या फिर प्राकृतिक आपदाओं के कारण नष्ट हो जाती । कला समीक्षकों के अनथक प्रयासों व गन्वेषणाओं के माध्यम से उन्होंने कलाओं को खोजा व उन कलाओं का समय अन्वेषण किया । इसके पश्चात् कला समीक्षकों के द्वारा कलाकृति के सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त किये व कलात्मक लेख प्रस्तुत किये गये जिससे कला का विस्तार हुआ कला के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदला, आम लोग कलाकारों की कलाकृतियों को समझने, अनुभव करने लगे । इन अनुसंधानों के माध्यम से हम अप्रत्यक्ष वस्तुओं को इस प्रकार संवेदित करते हैं मानो हमने उन्हें साक्षात् देखा हो, समीक्षात्मक सौन्दर्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है जैसे कि कृति शाश्वत् हो । प्रागैतिहासिक काल से लेकर समकालीन कला के कलाओं तक हम रूबरू हो पाएं है ये योगदान उन समीक्षकों के अथक प्रयासों का परिणाम है जो भुलाया नहीं जा सकता ।

## संदर्भ ग्रंथ

1.गोस्वामी, प्रेमचन्द, *आधुनिक चित्रकला के आधार स्तम्भ* : जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1995
2. चतुर्वेदी, जगदीश चन्द्र, *भारतीय कलाविदः इलाहाबाद* : उमेश प्रकाशन, 1993
3. प्रताप, रीता, *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास* : जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2013
4. भारती कांसीवाल, मीनाश्री, *ललित कला के आधारभूत सिद्धान्त :* राजस्थान : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2003
5. मन्हास, जगदीश सिंह, *सौन्दर्य बोध शास्त्रीय अध्ययन : ऐतिहासिक परम्परा*, नयी दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग

हाऊस, 1991

6. मोहन, सौमित्र, *भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य प्राणनाथ मागो* : नई दिल्ली, नैशन बुक ट्रस्ट, 2012

**(Footnotes)**

1. जगदीश सिंह मन्हास, *सौन्दर्य बोध शास्त्रीय : ऐतिहासिक परम्परा,* नयी दिल्ली, नैशनल पब्लिशिंग gkÅl ] 1991] i ñ 2,3
2. प्रेमचन्द गोस्वामी, *आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, जयपुर :* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2006, पृ॰ **18**
3. जगदीश चन्द्र चतुर्वेदी, *भारतीय कलाविद, इलाहाबाद :* उमेश प्रकाशन, 1993, पृ॰ **69**
4. रेता प्रताप, *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,* जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2013, पृ॰ **79**
5. जगदीश चन्द्र चतुर्वेदी, *भारतीय कलाविद, इलाहाबाद* : उमेश प्रकाशन, 1993, पृ॰ **74**